ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर , दरभंगा

शोध प्रारूप

MBVerma
20.04.2024

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय की
सामाजिक विज्ञान संकाय , राजनीति विज्ञान विभाग
को पी एच.डी की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

शोध शीर्षक -

भारत - श्रीलंका संबंध में हिन्द महासागर : सुरक्षा एवं व्यापार का विशेष अध्ययन

(2014 - 2024)

शोध - पर्यवेक्षक

20.04.24

Prof. Muneshwar Yadav
Head
Univ. Dept, of Pol.Sc.
L.N.M.U, Darbhanga

शोधार्थी

Devendra Kumar
18.4.2024

देवेंद्र कुमार

Class roll no - 28

PAT 2021 - E2216004

शोध का शीर्षक

भारत - श्रीलंका संबंध में हिन्द महासागर : सुरक्षा एवं व्यापार का विशेष अध्ययन

(2014 - 2024)

शोध परिचय

ऐतिहासिक रूप से , हिन्द महासागर विश्व राजनीति में एक विशिष्ट रणनीतिक और महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है । हिन्द महासागर से वैश्विक व्यापार का 86% भाग सम्पन्न होता है जो इसे "सबसे महत्वपूर्ण महासागर" के रूप में स्थापित करता है । अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ है की यह क्षेत्र व्यापार और संस्कृति के माध्यम से एकीकृत हुआ है , साथ ही यह भारत के सुरक्षा हितों के लिए भी केन्द्रीय महत्व का है । बीते कुछ वर्षों में , महान वैश्विक शक्ति प्रतिस्पर्धा की पृष्ठभूमि में, हिन्द महासागर क्षेत्र (IOR) विश्व राजनीति की "नई धुरी" के रूप में विशेष ध्यान आकर्षित कर रहा है । यह देखना इस शोध का उद्देश्य है की इस क्षेत्र के परंपरागत हितधारक इस विकास को कैसे देखते है ? वे अपने लिए क्या भूमिका स्वीकार करते है ? 2009 में गृह युद्ध के समाप्ति के बाद श्रीलंका खुद को एक राष्ट्र के रूप में पुनः स्थापित करने के लिए अपनी "दक्षिण एशियाई पहचान" के साथ-साथ "हिन्द महासागरीय देश" की पहचान बनाने की कोशिश कर रहा है । जबकि भारत दक्षिण एशिया को अपने स्वाभाविक प्रभाव क्षेत्र के रूप में अंकित करता है । कोलंबो IORA की october 2023 बैठक में भारतीय विदेश मंत्री ने भारत की महत्वकांक्षा को जाहिर किया की भारत "दुनिया का मित्र" , और "वैश्विक दक्षिण" की आवाज बनना चाहता है और एक स्वतंत्र , खुले और समावेशी हिन्द महासागर क्षेत्र के लिए प्रतिबद्ध हैं।

भारत और श्रीलंका के मध्य एक जीवंत और बढ़ती आर्थिक और वाणिज्यिक साझेदारी है, जिसमे पिछले कुछ वर्षों में काफी विस्तार देखा गया है । 2000 मे भारत श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौते के लागू होने से दोनों देशों के बीच व्यापार के विस्तार में महत्वपूर्ण लाभ मिला है । दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों में एक समृद्ध विकास साझेदारी भी शामिल है जिसमें बुनियादी ढाँचे, कनेक्टविटी , परिवहन , आवास , स्वास्थ्य , आजीविका और पुनर्वास , शिक्षा , और औद्योगिक विकास जैसे क्षेत्र शामिल है । भारत परंपरागत रूप से श्रीलंका के सबसे बड़े व्यापार भागीदारों में से एक रहा है और श्रीलंका सार्क में भारत के सबसे बड़े व्यापार भागीदारों में से एक बना हुआ है । भारत 2021 में 5.45 बिलियन अमेरिकी डॉलर के समग्र द्विपक्षीय व्यापारिक भागीदार था । 2020 की तुलना में 2021 में द्विपक्षीय व्यापार में उल्लेखनिए वृद्धि (लगभग 48%) भारत और श्रीलंका के बीच व्यापक वाणिज्यिक जुड़ाव की गहराई को दर्शाता है । 2000 में मुक्त व्यापार लागू होने के बाद से

Supervisor
University Department of Political Science
Mithila University, Darbhanga

भारत श्रीलंकाई निर्यात में काफी वृद्धि हुई और पिछले कुछ वर्षों में श्रीलंका के भारत में कुल निर्यात का 60% से अधिक ने मुक्त व्यापार के नियमों का लाभ उठाया । श्रीलंका की रणनीतिक स्थिति उसे समुद्री क्षेत्र की निगरानी के विषय में हिन्द महासागर क्षेत्र में उसे एक आवश्यक भूमिका सौंपता है ।

शोध समस्या कथन :

भारत और श्रीलंका के बीच हिन्द महासागर से जुड़े द्विपक्षीय व्यापार और सुरक्षा के क्षेत्र में व्यवस्थित एवं विशेषीकृत अनुसंधान की आवश्यकता हैं । इस अनुसंधान में निम्नलिखित मुख्य प्रश्नों का अध्ययन मौलिक उद्देश्य हैं ।

- भारत - श्रीलंका के मध्य सुरक्षा एवं व्यापार के संबंध में हिन्द महासागर की क्या महत्ता है ?
- हिन्द महासागर में भारत एवं श्रीलंका के लिए सुरक्षा के निहित अभिप्राय क्या है ?
- भारत एवं श्रीलंका के मध्य हिन्द महासागर नीतियों का प्रमुख तत्व और उद्देश्य क्या हैं?
- हिन्द महासागर में "वैश्विक महाशक्तियों की उपस्थिति" क्षेत्रीय सुरक्षा में परंपरागत हितधारकों जैसे BIMSTEC को कैसे प्रभावित करता है ?
- भारत हिंद महासागर में उभरती सुरक्षा चुनौतियों से कैसे निपटता है और भारत - श्रीलंका संबंध की इसमे क्या भूमिका है ?

साहित्य समीक्षा :-

Yajuvender, Yadav ,(2023) "India Sri Lanka Partnership In The 21st Century," । इस पुस्तक में भारत - श्रीलंका संबंधों की विशेषताओं को उद्धृत किया गया है । लेखक यह पुष्टि करते है की भारत श्रीलंका का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है और दोनों देशों के मध्य एक प्रोटो सिंगल मार्केट स्थापित करने का समझौता भी अंतिम चरण में चर्चा में है । दोनों देशों के बीच गहरे नस्लीय और सांस्कृतिक संबंध है , दोनों देश दक्षिण एशिया मे एक रणनीतिक स्थिति रखते है और हिन्द महासागर में एक साझा सुरक्षा छत्र बनाने की मांग कर रहे है ।

A. Subramanyam Raju, S. I. Keethaponcalan (2006) "Maritime Cooperation Between India and Sri Lanka," यह अध्ययन भारत और श्रीलंका के बीच विभिन्न समुद्री मुद्दों का विश्लेषण करती है । यह कार्य दोनों देशों के लिए उपलब्ध उचित विकल्पों पर केंद्रित है । यह एक बड़े और छोटे देश के बीच समस्या पर एक नए दृष्टिकोण को सामने लाता हैं।

Supervisor
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

Kousar Azam (2019) Indian Ocean : The New Frontier, प्रस्तुत पुस्तक में हिन्द महासागर की एक "रणनीतिक क्षेत्र" के रूप में उभार की यात्रा का अंकन किया गए है । इसमे हिन्द महासागर के विशाल विस्तार में रहने वाले समुदायों के बीच ऐतिहासिक , सांस्कृतिक , धार्मिक, व्यापारिक और प्रवासी संबंधों के विवरण दिए गए है ।

"Vinod Khobragade , (2023) India's Sri Lanka Policy" यह पुस्तक जुलाई 1987 में भारत - श्रीलंका समझौते से पहले और इसके उपरांत भारत के श्रीलंका परिप्रेक्ष्य , सैन्य हस्तक्षेप पर केंद्रित हैं। इसमे श्रीलंकाई गृहयुद्ध के बाद भारत - श्रीलंका संबंधों के विकास को रेखांकित किया गया है ।

"Jaishankar,S. (2020) The India Way Strategies for an Uncertain World ," वर्तमान में इस पुस्तक को विदेश नीति के आधिकारिक प्रवक्ता के रूप में देखा गया हैं। लेखक भारत के विदेश मंत्री है और उन चुनौतियों का विश्लेषण करते है और संभावित नीतिगत प्रतिक्रियाएं बताते है जो भारत के लिए अपने लक्ष्यों को सर्वोत्तम ढंग से आगे बढ़ाने के लिए अवरोध और सहायक है

Jaishankar, S. (2024). Bharat Matters. India. यह पुस्तक यह भूमिका प्रस्तुत करती भारतीय है की यहाँ जटिल भू-राजनीति कार्यरत है, जैसे कि चीन का उदय, संयुक्त राज्यों का बदला हुआ स्थिति, रूस की रणनीति, वैश्वीकरण का प्रभाव, और नई तकनीकों की शक्ति। भारत इन अस्त-से-अस्त हो रही समस्याओं का सामना करना चाहता है बिना इसके मुख्य ध्यान को कमजोर करते हुए कि यह एक अग्रणी शक्ति बनने की दिशा में है। "विश्व मित्र" के रूप में, यह वैश्विक दक्षिण का कल्याण चाहता है और वैश्विक भले के योगदान करना चाहता है। भारत वैश्विक गणनाओं में अधिक प्रमुख है और आगामी जिम्मेदारियों और अवसरों को स्वीकार करने के लिए तैयार है। अमृत काल में प्रवेश करते समय, यह विकास और प्रगति के युग की कल्पना करता है जबकि अपनी परंपराओं और विरासत के प्रति सच्चा रहता है।

Fernando,Sithara(ed.) (2015) United States-China-India: Strategic Triangle in the Indian Ocean Region: Challenges and Opportunities इस पुस्तक में विद्वानों ने त्रय संबंधों में श्रीलंका के महत्व पर विचार किया है। द्वीपीय राष्ट्र की महत्वपूर्ण भौगोलिक स्थिति और भारत एवं चीन के साथ इसके संबंधों को देखते हुए इसे विशेष रूप से IOR की चर्चा में केन्द्रीय स्थान प्रदान किया गया है । हंबनटोटा परियोजना के माध्यम से राष्ट्र में चीनी हस्तक्षेप ने द्वीप के लिए विशेष रूप से अमेरिका और भारत से आलोचना को आमंत्रित किया है। वे चीन द्वारा श्रीलंका के समर्थन को उनके साथ अपने द्विपक्षीय नियमों की पवित्रता के उल्लंघन के रूप में देखते हैं। श्रीलंका को अपने विशेष भूराजनीतिक स्थान का उपयोग करना चाहिए और 'अपनी विदेश नीति की स्वायत्तता से समझौता

Supervisor
University Department of Political Science
... Mithila University, Darbhanga

किए बिना अपने राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाने के लिए तीनों देशों के साथ बिना गठबंधन किए अच्छे संबंध बनाए रखने की रणनीति अपनानी चाहिए।'

Brewster, D. (2014). India's Ocean: The Story of India's Bid for Regional Leadership. United Kingdom: Taylor & Francis. यह पुस्तक हिंद महासागर में एक प्रमुख शक्ति के रूप में भारत की भूमिका का मूल्यांकन करती है। कई लोग मानते है कि हिंद महासागर स्वाभाविक रूप से भारत के प्रभाव क्षेत्र में आता है, लेकिन, जैसा कि यह पुस्तक दर्शाती है, क्षेत्रीय प्रभुत्व हासिल करने से पहले भारत को अभी एक लंबा रास्ता तय करना है। यह पुस्तक हिंद महासागर में अपनी भूमिका पर भारतीय सोच के विकास को रेखांकित करती है और समुद्री दक्षिण एशिया, हिंद महासागर द्वीपों, पूर्वी अफ्रीका, मध्य पूर्व, दक्षिण पूर्व एशिया और ऑस्ट्रेलिया सहित क्षेत्र में भारत के रणनीतिक संबंधों की जांच करती है। पुस्तक में संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा की गई है और हिंद महासागर में चीन की बढ़ती शक्ति के प्रति उसके दृष्टिकोण की पड़ताल की गई है। यह क्षेत्र की उभरती रणनीतिक व्यवस्था पर चर्चा के साथ समाप्त होता है - क्या भारत के पास इस क्षेत्र में अग्रणी शक्ति बनने के लिए आवश्यक योग्यता है?

Roy-Chaudhury, S. (2022). The China Factor: Beijing's Expanding Engagement in Sri Lanka, Maldives, Bangladesh, and Myanmar. United Kingdom: " चाइना फैक्टर श्रीलंका, मालदीव, बांग्लादेश और म्यांमार के साथ बीजिंग के राजनीतिक, आर्थिक और रक्षा संबंधों की पड़ताल करता है, और क्षेत्र में भू-राजनीतिक सूक्ष्मताओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए द्विपक्षीय संबंधों को आँकता है। यह पुस्तक भारत के लिए कई निहितार्थों को सामने लाती है, अपने पड़ोसियों के साथ नई दिल्ली के जुड़ाव पर रोशनी डालती है और आगे बढ़ने के लिए नीतिगत सिफारिशें सुझाती है।

Zhu, C.(2017) India's Ocean: Can China and India Coexist? यह पुस्तक राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा दृष्टिकोण से हिंद महासागर में अशांत स्थिति का विश्लेषण करने पर केंद्रित है। इसमें हिंद-प्रशांत में प्रमुख शक्तियों के महान खेल और चीन के जवाबी कदमों से लेकर चीन और भारत की पारस्परिक मांगों और हिंद महासागर में संभावित संघर्षों तक के विषयों पर चर्चा की गई है। यह हिंद महासागर क्षेत्र और चीन की आर्थिक सुरक्षा के बीच संबंधों को भी संबोधित करता है और 21वीं सदी के समुद्री रेशम मार्ग की संभावनाओं का गहन विश्लेषण प्रदान करता है।

Mohan, C. R. (2012). Samudra Manthan: Sino-Indian Rivalry in the Indo-Pacific. । हिन्दू पौराणिक कथा - समुद्र मंथन या "समुद्र को हिलाना" से एक किस्से का स्मरण करते हुए, सी. राजा

Supervisor
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

मोहन चीन-भारत संघर्ष की कहानी सुनाते हैं, जो महादेव हिमालय से बह रहा है और भारत और पैसिफिक सागरों में आ गया है। उन्होंने तनाव कम करने और स्थिर भारत-पैसिफिक क्रम बनाने की संभावनाओं की जाँच की है। क्षेत्र की प्रमुख शक्ति अमेरिका, जो क्षेत्र में प्रमुख शक्ति है, को समुद्र-भारतीय प्रतिस्पर्धा में खिचा जा रहा है। चीन, भारत, और संयुक्त राज्यों की वर्तमान नौसेना क्षमताओं में बड़े अंतरों के बावजूद, मोहन का तर्क है कि तीनों देश भविष्य को बनाने के लिए एक त्रिकोणीय संघर्ष में बंधे हैं, जो पूर्वानुमानित है कि भविष्य को बनाएगा।

शोध उद्देश्य

- भारत - श्रीलंका संबंध में हिन्द महासागर की भू-राजनीतिक महत्व का मूल्यांकन करना।
- भारत- श्रीलंका की भौगोलिक स्थिति उनके मध्य व्यापार एवं सुरक्षा को कैसे प्रभावित करती है इसका अन्वेषण करना।
- भारत - श्रीलंका के रणनीतिक हितों और क्षेत्रीय स्थिरता पर उनके प्रभाव की जांच करना।
- वैश्विक शक्तियों के मध्य हिन्द महासागर के बढ़ते महत्व एवं भारत के लिए निहित अर्थ को स्पष्ट करना ।
- हिन्द महासागर में भारत - श्रीलंका संबंधों पर "वैश्विक शक्तियों " के प्रभाव की जांच करना।
- भारत की "SAGAR नीति" का मूल्यांकन करना ।

शोध परिकल्पना

- हिन्द महासागर में भारत एवं श्रीलंका के दृष्टिकोण की प्रकृति परस्पर सहयोगात्मक है।
- भारत - श्रीलंका के मध्य ऐतिहासिक - सांस्कृतिक मैत्री संबंध हिन्द महासागर में शांति और स्थिरता बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण कारक है ।
- भारत - श्रीलंका आर्थिक संबंधों की मजबूती के लिए हिन्द महासागर की सुरक्षा एक साझा हित है ।
- हिन्द महासागर क्षेत्र में "वैश्विक शक्तियों की उपस्थिति" परंपरागत हितधारकों के मध्य मजबूत व्यापारिक-सामरिक संबंधों को प्रभावित करने में निर्णायक भूमिका निभाता है ।
- हिन्द महासागर क्षेत्र में कूटनीतिक एवं सामरिक प्रभाव में कमी भारत के वैश्विक लक्ष्यों की पूर्ति में प्राकृतिक रूप से अवरोध उत्पन्न करता है ।

Supervisor
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

Devendra Kumar

शोध का विषय एवं अन्य अनुशासन के प्रति योगदान

अकादमिक ज्ञान को आगे बढ़ाना: यह शोध विशेष रूप से व्यापार और सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारत-श्रीलंका संबंधों का व्यापक विश्लेषण प्रदान करके अकादमिक चर्चा में योगदान देता है।

नीतिगत निर्णय: - नीति निर्माता और सरकारी अधिकारी अध्ययन के निष्कर्षों और नीति सिफारिशों से लाभान्वित हो सकते हैं। व्यापार की गतिशीलता को समझना - व्यापार पैटर्न और आर्थिक सहयोग का विश्लेषण द्विपक्षीय व्यापार को प्रभावित करने वाले कारकों की बेहतर समझ में योगदान देता है।

सुरक्षा अध्ययन संवर्द्धन: - हिंद महासागर में सुरक्षा की गतिशीलता में गहराई से उतरकर, अनुसंधान सुरक्षा अध्ययनों में ज्ञान के भंडार को जोड़ता है।

क्षेत्रीय गतिशीलता:- अध्ययन भारत-श्रीलंका संबंधों के क्षेत्रीय निहितार्थों की पड़ताल करता है, और इस बात पर प्रकाश डालता है कि ये गतिशीलता व्यापक दक्षिण एशियाई भू-राजनीतिक परिदृश्य को कैसे प्रभावित करती है। यह समझ क्षेत्रीय अध्ययन, भू-राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध विद्वानों के लिए महत्वपूर्ण है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और अर्थशास्त्र: ,समुद्री अध्ययन ,राजनीति विज्ञान ,विकास अध्ययन ,सुरक्षा नीति और रणनीति संबंधित अनुशासन में योगदान देता है ।

शोध प्रविधि

यह शोध ऐतिहासिक- विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित होगा | साहित्य की समीक्षा में व्यापार और सुरक्षा पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारत-श्रीलंका संबंधों से संबंधित अकादमिक साहित्य, शोध पत्रों और नीति दस्तावेजों की व्यापक समीक्षा की जाएगी | डेटा संग्रह और विश्लेषण भारत और श्रीलंका के बीच व्यापार प्रवाह, निवेश पैटर्न और आर्थिक संकेतकों पर मात्रात्मक आँकड़े इकट्ठा करना और उसका विश्लेषण करना होगा । व्यापार आंकड़ों में रुझानों और सहसंबंधों की पहचान करने के लिए सांख्यिकीय तरीकों का उपयोग करना । समुद्री गतिविधियों, रक्षा सहयोग और क्षेत्रीय भू-राजनीतिक विकास सहित सुरक्षा-संबंधित आंकड़ों का मूल्यांकन करना| सुधार के संभावित क्षेत्रों की पहचान करने के लिए समान क्षेत्रीय साझेदारियों के साथ भारत-श्रीलंका संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन शामिल होगा ।

Supervisor
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

Devendra Kumar
18.4.24

कार्ययोजना : प्रस्तावित अध्ययायीकरण

- अध्याय I परिचय
- अध्याय II - भारत - श्रीलंका संबंध - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- अध्याय III - भारत - श्रीलंका एवं हिन्द महासागर के उभरते मुद्दे
- अध्याय IV - व्यापार संबंध - चुनौतिया एवं संभावनाएं
- अध्याय V - सुरक्षा संबंध - विरोध एवं समेकन
- अध्याय VI - वैश्विक शक्तियां एवं हिन्द महासागर
- अध्याय VII निष्कर्ष

संदर्भ सूची

Supervisor
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

Devendra Kumar

ग्रंथ सूची :-

प्राथमिक स्त्रोत

Indo - Sri Lanka Free Trade Agreement (ISFTA) document

Statistical Analysis Report :

Sri Lanka's Trade with India vs Exports and Imports under ISFTA

Sri Lanka's Product-wise Exports under ISFTA:(2020 & 2021)

Sri Lanka's Product-wise Exports under ISFTA from 2017 -2021

LOK SABHA ,UNSTARRED QUESTION NO-1510,ANSWERED ON- 28/07/2023 MISSION SAGAR document.

दि्वतीयक स्त्रोत

Brewster, D. (2014). India's Ocean: The Story of India's Bid for Regional Leadership. United Kingdom: Taylor & Francis

Dube, S. (2017). इक्कीसवीं सदी में भारत-श्रीलंका संबंध: समस्याएं और संभावनाएं. India: Nirmala Pablikeśaṃsa

Milana, R. (2009). भारत और श्रीलंका संबंध: संदर्भ, जातीय संघर्ष. India: Surendrakumāra eṇḍa Sanza.

Mīnā, G. C. (2019). भारत-श्रीलंका सम्बन्ध. India: Bābā Pablikeśana.

Subramanyam Raju, A., Keethaponcalan, S. I. (2006). Maritime Cooperation Between India and Sri Lanka. India: Manohar.

Khobragade, V. (2023). India's Sri Lanka Policy. United Kingdom: Taylor & Francis

Jaishankar, S. (2020). The India Way: Strategies for an Uncertain World. India: HarperCollins India.

Viswanathan, V. N. (1990). INDO-SRILANKAN RELATIONS—TOWARDS CONFIDENCE BUILDING. India Quarterly, 46(1), 90–95

Supervisor
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

Devendra Kumar
19.4.24

Yadav, Y. (2023). India Sri Lanka Partnership In The 21st Century. India: Gaurav Book Centre Pvt. Limited

Yādava, A. K. (2009). Bharat Sri Lanka Sambandh. India: Navlok Prakashan.

Roy-Chaudhury, S. (2022). The China Factor: Beijing's Expanding Engagement in Sri Lanka, Maldives, Bangladesh, and Myanmar. United Kingdom: KW.

Zhu, C. (2017). India's Ocean: Can China and India Coexist?. Singapore: Springer Nature Singapore.

Mohan, C. R. (2012). Samudra Manthan: Sino-Indian Rivalry in the Indo-Pacific. United States: Brookings Institution Press.

Jaishankar, S. (2024). Bharat Matters. India: Rupa Publications India Pvt Limited.

Joshi, V. (2012). Econometric Analysis of the India–Sri Lanka Free Trade Agreement*. Asian Economic Journal, 26(2), 159-180. https://doi.org/10.1111/j.1467-8381.2012.02078.

....

Supervisor
University Department of Political Science